

छायावादोत्तर काव्य की प्रमुख विशेषताएं

1. यथार्थवादी दृष्टिकोण (Reality-based approach): छायावाद की काल्पनिक उड़ान और अमूर्त सौंदर्य के स्थान पर इस युग के कवियों ने जीवन के वास्तविक और धरातलीय यथार्थ को अपनी कविताओं में प्रमुखता दी।
2. सामाजिक चेतना एवं शोषित वर्ग की पक्षधरता: इस काल की कविताओं (विशेषकर प्रगतिवादी धारा) में समाज के गरीब, मजदूर और शोषित वर्ग के प्रति गहरी सहानुभूति व्यक्त की गई है और पूंजीपतियों के खिलाफ आवाज उठाई गई है।
3. वैयक्तिकता और सहजता: इस युग के कवियों ने अपने सुख-दुख और व्यक्तिगत अनुभूतियों को बिना किसी आड़बर या घुमाव के, अत्यंत सरल और सीधे रूप में प्रकट किया है।
4. रूढ़ियों का विरोध: प्राचीन सामाजिक कुप्रथाओं, अंधविश्वासों और धार्मिक ढोंगों पर इन कवियों ने तीखे प्रहार किए और प्रगतिशील विचारों का समर्थन किया।
5. सरल और व्यावहारिक भाषा (शिल्प): छायावाद की कठिन, लाक्षणिक और संस्कृतनिष्ठ भाषा को छोड़कर इस काल के कवियों ने आम बोलचाल की खड़ी बोली हिंदी को अपनाया, ताकि आम जनता तक बात आसानी से पहुंच सके।

छायावादोत्तर कवि और उनकी प्रमुख रचनाएँ

<u>क्रम संख्या</u>	<u>कवि का नाम</u>	<u>प्रमुख रचनाएँ</u>
1.	रामधारी सिंह 'दिनकर'	कुरुक्षेत्र, रस्मिरथी, उर्वशी, हुंकार
2.	नागार्जुन	युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, प्यासी पथराई आँखें
3.	सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	आंगन के पार द्वार, हरी घास पर क्षण भर, इत्यलम
4.	हरिवंश राय बच्चन	मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण
5.	गजानन माधव 'मुक्तिबोध'	चांद का मुंह टेढ़ा है, भूरी-भूरी खाक-धूल
6.	धर्मवीर भारती	अंधा युग, कनुप्रिया, ठंडा लौहा, सात गीत वर्ष
7.	केदारनाथ अग्रवाल	युग की गंगा, फूल नहीं रंग बोलते हैं
8.	नरेंद्र शर्मा	पलाश वन, प्रवासी के गीत, शूल फूल

भारतेन्दु-द्विवेदी युग में प्रस्फुटित व पल्लवित खड़ी बोली हिन्दी कविता छायावाद युग में आकर पर्याप्त विकसित और समृद्ध हुई। छायावादी कवियों ने खड़ी बोली हिन्दी कविता को परिष्कृत स्वरूप प्रदान कर उसे अपेक्षित काव्यात्मक उत्कर्ष प्रदान किया और आधुनिक हिन्दी कविता ने अपने विकास की एक महत्वपूर्ण मंजिल प्राप्त कर ली। इसने तत्कालीन परिवेश की बाह्य और व्यक्तिमन की आन्तरिक अनुभूतियों को रमणीय एवं ललित ढंग से अभिव्यक्त करने में विशेष सफलता प्राप्त की। द्विवेदी युग में इतिवृत्तात्मक पद्धति द्वारा सांस्कृतिक मान्यताओं, सामाजिक मर्यादाओं और अनेक नैतिक मूल्यों को सहज, सरल और स्पष्ट ढंग से अभिव्यक्त किया गया। छायावादी कविता में व्यक्ति-मन की आन्तरिक अनुभूतियों एवं वेदनाओं को प्रतीकगर्भी शब्दावलियों में बिम्बात्मक काव्यभाषा के माध्यम से लक्षित-व्यंजित करने का स्तरीय प्रयास किया गया। समग्रतः भारतीय परिवेश में व्याप्त नव जागरण की चेतना का काव्यात्मक स्वरूप अपनी सम्पूर्ण भास्वरता के साथ प्रतिफलित हुआ। इसके बाद खड़ीबोली हिन्दी कविता के विकास की अगली यात्रा प्रारम्भ होती है, जो हिन्दी कविता के अनेक नये और अनुद्युत क्षितिजों का उन्मेष और विस्तार करती है। यह नवीन यात्रा श्रव्य कविता की पाठ्य कविता में रूपान्तरण की प्रक्रिया है। बदले हुए परिवेश और नवीन परिस्थितियों के अनुरूप अपने को ढालने और सँवारने की प्रक्रिया है। कविता में बचकानी तुतलाहट, किशोर भावुकता और मनोरम कल्पना के स्थान पर प्रौढ़ समझदारी, परिपक्व बौद्धिकता और ठोस-खुरदरे यथार्थ के सन्निवेश की कोशिश है। धर्म-दर्शन के स्थान पर वैज्ञानिक-सोच और तार्किक शैली को कविता के केन्द्र में स्थापित करने का प्रयास है।

छायावादोत्तर काल में हिन्दी कविता की पूर्व परम्परा से भिन्न और नवीन दृष्टि तथा वैज्ञानिक सोच से समन्वित जिन काव्य-प्रवृत्तियों का उन्मेष हुआ उनमें सर्वप्रथम उल्लेखनीय 'प्रगतिवादी' कविताएँ हैं। 'प्रगतिवादी' आन्दोलन ने, जिसे मार्क्सवादी चिन्तन का साहित्यिक प्रतिफलन माना गया, न केवल कविता को अपितु अन्य साहित्यिक विधाओं को भी व्यक्तिमन की आन्तरिक पहेलियों से निकालकर ठोस यथार्थ जगत के काफी करीब लाया। इसने भारतेन्दु युग में लोकोन्मुखी दृष्टि और यथार्थवादी स्वर को तार्किक आधार और पर्याप्त शक्ति प्रदान की। प्रगतिवादी आन्दोलन का सैद्धान्तिक आधार एक वैज्ञानिक विश्वदृष्टिकोण है, जो हर समाज की अपनी वस्तुगत परिस्थितियों और चुनौतियों के अनुरूप अलग-अलग रूप में अस्तित्व ग्रहण कर सका। न केवल हिन्दी अपितु प्रायः सभी भारतीय भाषाओं में इस प्रकार के काव्यान्दोलनों का जन्म हुआ। इस प्रकार के काव्यान्दोलनों में साहित्य की प्रयोजनशीलता के सन्दर्भ में कोई विवाद न था;